कोई भी तब तक असंभव है जब तक की उसको किया नहीं जाता।
– अज्ञात

सियासी स्तर पर कटुता

लोकतांत्रिक व्यवस्था में विरोध का अधिकार हर व्यक्ति को है। अगर कोई किसी मुद्दे पर विरोध कर रहा है तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह सरकार, समाज और देश का शत्रु है। एक जिम्मेदार व्यक्ति की शाब्दिक हिंसा भीड़ की हिंसा के लिए गुंजाइश पैदा करती है।

नवीन जोशी।

दिल्ली में चुनाव प्रचार के दौरान जिस तरह की उग्र भाषा का इस्तेमाल हो रहा है, वह दुर्भाग्यपूर्ण है। चुनावों के दौरान आरोप–प्रत्यारोप या थोड़ी–बहुत छींटाकशी आम बात है लेकिन इनमें भी शालीनता का दायरा दूर–दराज के इलाकों में ही पार होता है। देश की राजधानी में प्रतिष्ठित मंचों से कड़वी भाषा का प्रयोग बताता है कि सियासी स्तर पर कटुता बहुत ज्यादा बढ़ गई है। ऐसी बातें बड़े पदों पर बैठे लोगों के मुंह से सुनी जा रही हैं। अपने देश के ही एक तबके को वे इस तरह निशाना बना रहे हैं जैसे वह देश का दुश्मन हो।

चुनाव प्रचार के दौरान गृह मंत्री ने नागरिकता कानून के विरोध में धरना–प्रदर्शन कर रहे लोगों का जिक्र करते हुए कहा कि दिल्ली के मतदाता इस तरह ईवीएम का बटन दबाएं कि प्रदर्शन करने वालों को करंट लगे। वे केंद्र सरकार के अहम प्रतिनिधि होने के नाते जनता के अभिभावक भी हैं। अगर समाज का एक वर्ग सरकार के किसी कदम से असहमत है तो उसकी शिकायत सुनना, उसकी गलतफहमी दूर करना और सरकार में उसका भरोसा बहाल करना उन्हीं का काम है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में विरोध का अधिकार हर व्यक्ति को है। अगर कोई किसी मुद्दे पर विरोध कर रहा है तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह सरकार, समाज और देश का शत्रु है।

केंद्र में सत्तारूढ़ दल के सांसद प्रवेश वर्मा ने तो उन प्रदर्शनकारियों के बारे में कहा कि 'ये लोग आपके घरों में घुसेंगे, आपकी बहन–बेटियों को उठायेंगे, उनके साथ रेप करेंगे, उनको मारेंगे!' नेताओं को यह शिकायत रहती है कि बिना किसी सबूत के लोग उन्हें भ्रष्ट कहते हैं। लेकिन इन सांसद महोदय ने किस आधार पर धरने पर बैठे लोगों के बारे में ऐसा कह दिया? एक जनसमूह के चरित्र के बारे में फैसला करने का हक उन्हें किसने दिया है? इस सिलसिले की अगली कड़ी के रूप में वित्त राज्यमंत्री अनुराग ठाकुर ने एक सभा में भीड़ से हिंसक नारे लगवाए।

मंत्री महोदय का दावा है कि उन्होंने तो सिर्फ नारे का पहला हिस्सा कहा, जिसमें गद्दारों का जिक्र था। गोली मारने वाला दूसरा हिस्सा भीड़ ने अपनी मर्जी से कहा। ऐसी विचित्र दलील क्या आम लोगों की समझ से बाहर हैं? संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों को समझना चाहिए कि जनता उनकी बातों को गंभीरता से लेती है। एक जिम्मेदार व्यक्ति की शाब्दिक हिंसा भीड़ की हिंसा के लिए गुंजाइश पैदा करती है। राजनीतिक लाभ के लिए इस तरह अराजकता को बढ़ावा देने का खामियाजा अंततरू देश को उठाना पड़ेगा, जिसे संभालने की जिम्मेदारी फिलहाल इन पर है।

कुछ शब्द

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

फिर आता है पार्टी का मध्यकाल, अब लगती है जबान लडखडाने। कुछ शब्द निकलते हैं, कुछ शब्द हवा के साथ हवा में। किस्से कहानियों का दौर चलता है और हर कोई अपनी कहानी का बादशाह। तेज संगीत और पदताल में तीव्रता। यहाँ कोई भेद नहीं होता है, सब एक ही लेवल पर। कोई छुआछूत नहीं। आप बहुत अच्छे हैं, आय लव यू, तू मेरा भाई है कहते कहते गलबहियां डाल देते हैं, पप्पियों का आदान प्रदान होता है,। गालियों का दौर भी शुरू हो जाता है। पार्टी का अंत होते होते शुरू होता है उल्टियों का दौर। सिर मे खुमारी। एडमिन पकड़ पकड़ कर लोगों को कैब मे बिठाते है। कैब ड्राइवर राम राम करते हुए लोगों को गंतव्य तक पहुंचा देते हैं।

संपादकीय

कई पहचानों के बीचें

चार दिन के मॉरिशस प्रवास में कुल तीन बार मुझे टैक्सी करनी पड़ी और संयोग ऐसा कि तीनों बार टैक्सी के ड्राइवर मुसलमान निकले। इनमें दो, करीमभाई और सलीमभाई आपस में सगे भाई थे। सारे ड्राइवर जिस ट्रिप का 1200 मांग रहे थे, उसी के लिए मैंने कहा, 'करीमभाई ने तो 800 में ले जाने को कहा था, पता नहीं कहां रह गए।' तभी ड्राइवरों के बीच से एक आदमी निकला और हाथ पकड़ कर बोला, 'चलिए।' बैठ जाने पर बताया, 'उसी का भाई हूं, जितने में वो बोला उतने में ही चलूंगा।' हाल में इस देश के शीर्ष हिंदी कथाकार अभिमन्यु अनत की कहानी 'टूटा पहिया' पढ़ते हुए उसके दिलचस्प नायक 'भयवा यूसुफ तांगेवाला' की जिंदगी से जुड़े ब्यौरे झट मुझे इस प्रस्थापना की तरफ ले गए कि कहीं ऐसा तो नहीं कि इस छोटे से द्वीपीय देश के ट्रांसपोर्ट सेक्टर पर तांगे से लेकर टैक्सी तक मुस्लिम आबादी का ही वर्चस्व चलता चला आ रहा हो। बहरहाल, ऐसी किसी अटकल से भयवा यूसुफ के घोड़े 'वीर कुणाल' का क्या लेना–देना, जो उसका सबसे गहरा दोस्त और कहानी की जान है! लोकतांत्रिक राजनीति एक स्तर पर 'वल्गर बिजनेस', भदेस कारोबार है। कुल साढ़े बारह लाख की आबादी वाले मॉरिशस में कहने को कोई शुद्ध जाति नहीं बची है। 1968 में आजादी मिलने तक भारत से वहां जाने वाले आदि–पूर्वज का नाम ही इंसान का जाति–गोत्र बना रहता था और 'जहजिया भाई' और 'जहजिया बहन' ही आपस का सबसे अहम रिश्ता हुआ करता था। लेकिन अभी चुनावी राजनीति की धुरी दोनों यादव–कोइरी शासक परिवार बने रहते हैं, और दोनों की कुशलता इसमें देखी जाती है कि तीसरी बड़ी जाति दुसाध को कौन अपने खेमे में कर ले जाता है। अपनी बची जिंदगी जो हिंदू–मुसलमान, अगड़ा–पिछड़ा बनकर नहीं, पुरानी जहजिया पहचान के सहारे ही जीना चाहता है।

सबसे बड़ी बात यह है कि ये धरने और प्रदर्शन अहिंसक हैं। कहीं से तोड़-फोड़ और खून-खराबे की खबरें नहीं आ रही हैं। जो भी इसका विरोध कर रहे हैं, वे इसे गलत नहीं बता रहे हैं।

प्रदर्शन उनके इशारे पर नहीं

वेदप्रताप वैदिक।

यूरोपीय संघ की संसद में हमारे नए नागरिकता कानून के विरुद्ध लगभग आधा दर्जन प्रस्ताव आ गए हैं। हमारी आधा दर्जन विधानसभाएं उसके खिलाफ प्रस्ताव पारित कर रही हैं। देश में दर्जनों शाहीन बाग उग आए हैं। दिल्ली के अलावा लखनऊ, मुंबई, कोलकाता, हैदराबाद, तिरुवनंतपुरम जैसे शहरों में इस कानून के खिलाफ प्रदर्शन हो रहे हैं। कई प्रमुख बुद्धिजीवियों और कलाकारों ने खुलकर अपना विरोध प्रकट किया है। इस विरोध–प्रदर्शन में विरोधी दल हिस्सा जरूर ले रहे हैं लेकिन ये प्रदर्शन उनके इशारे पर नहीं हो रहे हैं।

भारत के मुसलमानों में इस कानून से डर फैल गया है लेकिन इन प्रदर्शनों के आयोजकों और भागीदारों में हिंदुओं, सिखों, ईसाइयों और बौद्धों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया है। केरल के तो गिरजाघरों ने फतवे जारी किए हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि ये धरने और प्रदर्शन अहिंसक हैं। कहीं से तोड़–फोड़ और खून–खराबे की खबरें नहीं आ रही हैं। जो भी इसका विरोध कर रहे हैं, वे इसे गलत नहीं बता रहे हैं। हर व्यक्ति इस बात की सराहना कर रहा है कि पड़ोसी देशों के उत्पीड़ित लोगों के लिए भारत के द्वार खुल रहे हैं। लेकिन फिर भी इस कानून में कई

कमियां रह गई हैं, जिनका जिक्र मैं आगे करूंगा। जिस बात ने मुसलमानों को भयभीत कर दिया है, वह यह गलतफहमी है कि इस कानून के लागू होने के साथ जो नागरिकता रजिस्टर बनेगा, उसमें से मुसलमानों के नाम बाहर कर दिए जाएंगे। किसकी हिम्मत है, जो यह दुस्साहस करेगा? नागरिकता रजिस्टर और पड़ोसी शरणार्थी कानून दो अलग–अलग चीजें हैं। किसी भी व्यक्ति की नागरिकता तय करने के नियम–उप–नियम अभी तक नहीं बने हैं। वे भेदभावपूर्ण हो ही नहीं सकते। पहली बात, सरकार इस बारे में सावधान रहेगी और फिर अदालत ऐसे किसी भी भेदभावपूर्ण नियम को खारिज कर देगी। जहां तक पड़ोसी देशों के शरणार्थियों को शरण देने का सवाल है, यह संशोधित कानून काफी जल्दबाजी में बना है और जल्दबाजी में ही पारित हो गया है। इस पर पुनर्विचार करने में कोई बुराई नहीं है। इसे दोबारा संशोधित करने से संसद या सरकार की नाक नीची नहीं होने वाली है। वह ऊंची ही होगी। इस कानून में बहुत–सी कमियां रह गई हैं। पहली, यह बहुत सराहनीय है कि पड़ोसी देशों के उत्पीड़ितों के लिए भारत के द्वार इतने धमाके से पहली बार खुले हैं लेकिन सिर्फ धार्मिक उत्पीड़ितों के लिए ही क्यों? राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, जातीय और आर्थिक उत्पीड़ितों के लिए क्यों नहीं? 1971 में बांग्लादेश से जो एक करोड़ लोग भारत आए थे, क्या उनका धार्मिक उत्पीड़न हुआ था? क्या वे मुसलमान नहीं थे? तालिबान के कारण अफगानिस्तान से भागकर आनेवाले पठान, ताजिक, हजारा और उजबेक क्या मुसलमान नहीं थे? पाकिस्तान के बलूच और सिंधी क्या मुसलमान नहीं हैं? वे भागकर भारत क्यों आते हैं? क्या अदनान सामी और तसलीमा नसरीन मुसलमान नहीं हैं? यदि उनको भारत शरण दे सकता है तो अन्य मुसलमानों के लिए अपने दरवाजे वह बंद क्यों करता है?

अष्टयोग-4901

	6			2	3	4
2	39	1	29		26	
7		5	4			1
	30	2	27	1	31	
		3			6	7
6	30		39	4	35	
3	5		6		1	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4900 का हल

7	6	5	4	3	2	1
2	35	1	26	6	28	6
5	7	2	4	1	6	3
4	28	4	27	4	36	4
1	2	3	4	5	6	7
6	35	7	35	7	38	2
3	7	6	1	2	4	5

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

त्वरित सुरक्षित संदेश

मुकुल श्रीवास्तव। त्वरित सुरक्षित संदेश और अटैचमेंट साझा करने, एक सुविधाजनक समूह संदेश सुविधा के साथ एन्क्रिप्टेड वॉइस और वीडियो कॉल की स्थापना के लिए उपयोग किए जाने वाले एप्लिकेशन। क्लाउड मैसेजिंग नेटवर्क के बजाय सिग्नल एक स्वतंत्र एंड–टू–एंड एन्क्रिप्टेड प्लेटफॉर्म संचार संचारित करता है। एप्लिकेशन उपयोग करने के लिए बहुत आसान और सरल है, जहां इंस्टॉलेशन फोन नंबर की पुष्टि करने के साथ शुरू होता है, जिसके बाद प्लेटफॉर्म मौजूदा संदेशों को आयात करने के बाद स्टैंडअलोन या डिफॉल्ट एसएमएस मैसेजिंग एप्लिकेशन के रूप में अपनी कार्यक्षमता शुरू करता है। यह शायद निजी संचार साझा करने का सबसे सुरक्षित तरीका है। दिलचस्प है, अपने एन्क्रिप्टेड वीडियो कॉल फीचर के साथ सिग्नल ने स्पष्ट रूप से डेटा एन्क्रिप्शन के अपने स्तर को बढ़ा दिया है। आवाज और वीडियो कॉल के साथ एंड–टू–एंड एन्क्रिप्शन का समर्थन करने वाले एप्लिकेशन ने अपनी उन्नत कार्यक्षमता के साथ गोपनीयता और सुरक्षा के समान स्तर को सुनिश्चित किया है।